अध्याय 17

जंगल में और अधिक संघर्ष

सीनै पर्वत पर यात्रा करते हुए दो और संकट इस्राएलियों के सामने आए। अध्याय 17 में उन्होंने स्वयं को बिना पानी के पाया और अमालेकियों द्वारा चढ़ाई किया गया।

रपीदीम तक पहुँचने तक इस्राएलियों ने अपनी यात्रा जारी रखी। वहाँ उन्हें पानी नहीं मिला। जैसा कि पहले उन्होंने शिकायत किया था, और मूसा पर उनको प्यासा मार डालने के लिये जंगल में लाने का आरोप लगाया गया (17:1-3)। मूसा ने बदले में, परमेश्वर को दोहाई देते हुए पूछा कि उसे क्या करना चाहिए और बचाव में कहा कि लोग उस पर पथराव करने को तैयार थे (17:4)। यहोवा ने उसे लोगों के आगे से जाने का निर्देश दिया और उसी लाठी का उपयोग करते हुए जो मिस्र के होरेब में चट्टान को मारने के लिये निर्देशित किया था ताकि "उसमें से पानी निकलेगा" (17:5, 6)। मूसा ने परमेश्वर के आदेशों का पालन किया, और चट्टान से पानी बह निकला। मूसा ने लोगों के झगड़ालू स्वभाव को प्रतिबिंबित करने के लिये उस स्थान का नाम मस्सा और मरीबा रखा (17:7)।

एक अन्य संकट तब आया जब अमालेकी रपीदीम (17:8) में इस्राएलियों के विरुद्ध लड़ने लगे। मूसा ने यहोशू को इस्राएलियों की सेनाओं का प्रभारी नियुक्त किया। फिर, हारून और हूर के साथ, मूसा युद्धक्षेत्र (17:9, 10) को देखते हुए पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गया। जब तक वह अपना हाथ उठाए रहता था तब तक तो इस्राएल प्रबल होता था; परन्तु जब जब वह उसे नीचे करता तब तब अमालेक प्रबल होता था (17:11, 12)। हारून और हूर ने उसे एक पत्थर पर बैठा दिया, और उसके हाथों को सम्भाले रहे (17:12), और इस्राएल ने युद्ध जीत लिया (17:13)।

परमेश्वर ने विधियों को कह सुनाया कि इस्राएल अमालेक के साथ युद्ध करता रहेगा और उसने मूसा को इस बात को पुस्तक में लिखने का निर्देश दिया; इस्राएल को बताया गया कि परमेश्वर अमालेक का स्मरण भी पूरी रीति से मिटा देगा (17:14)। मूसा ने इस्राएल की जीत की स्मृति में एक वेदी बनाई (17:15, 16)।

रपीदीम में चट्टान से पानी (17:1-7)

[1]फिर इस्राएलियों की सारी मण्डली सीन नामक जंगल से निकली, और यहोवा के आज्ञानुसार कूच करके रपीदीम में अपने डेरे खड़े किए; और वहाँ उन

लोगों को पीने का पानी न मिला। [2]इसलिये वे मूसा से वाद-विवाद करके कहने लगे, "हमें पीने का पानी दे।" मूसा ने उनसे कहा, "तुम मुझ से क्यों वाद-विवाद करते हो? और यहोवा की परीक्षा क्यों करते हो?" [3]फिर वहाँ लोगों को पानी की प्यास लगी, तब वे यह कहकर मूसा पर बुड़बुड़ाने लगे, "तू हमें बाल-बच्चों और पशुओं समेत प्यासा मार डालने के लिये मिस्र से क्यों ले आया है?" [4]तब मूसा ने यहोवा की दोहाई दी, और कहा, "इन लोगों के साथ मैं क्या करूँ? ये सब मुझ पर पथराव करने को तैयार हैं।" [5]यहोवा ने मूसा से कहा, "इस्राएल के वृद्ध लोगों में से कुछ को अपने साथ ले ले; और जिस लाठी से तू ने नील नदी पर मारा था, उसे अपने हाथ में लेकर लोगों के आगे बढ़ चल। [6]देख, मैं तेरे आगे चलकर होरेब पहाड़ की एक चट्टान पर खड़ा रहूँगा; और तू उस चट्टान पर मारना, तब उसमें से पानी निकलेगा, जिससे ये लोग पीएँ।" तब मूसा ने इस्राएल के वृद्ध लोगों के देखते वैसा ही किया। [7]और मूसा ने उस स्थान का नाम मस्सा और मरीबा रखा, क्योंकि इस्राएलियों ने वहाँ वाद-विवाद किया था, और यहोवा की परीक्षा यह कहकर की, "क्या यहोवा हमारे बीच है या नहीं?"

आयत 1. मिस्र से सीनै की यात्रा कई चरणों में पूरा हुआ, क्योंकि इस्राएलियों ने अलग-अलग जगहों में डेरे खड़े किए थे। **सीन नामक जंगल** को छोड़कर, जहाँ यहोवा ने भोजन की आवश्यकता पूरी की थी, इस्राएली **रपीदीम** की ओर कूच किए। स्पष्ट है, रपीदीम सीनै पर्वत से अधिक दूर नहीं था, क्योंकि यह "होरेब" के पास था (17:6)। होरेब और सीनै एक दूसरे के लिये उपयोग किए जाते हैं ताकि पहाड़ का उल्लेख किया जा सके जहाँ इस्राएल ने व्यवस्था को प्राप्त कर किया था। टिप्पणीकार रपीदीम के स्थान पर सहमत नहीं हैं।[1]

रपीदीम में, इस्राएली को **पानी न** मिला। स्थान से लोगों को निराशा हो सकती है क्योंकि इसमें मरुद्यान की उपस्थिति थी, परन्तु जब वे पहुँचे तो उन्होंने पाया कि सभी कुएँ सूखी हुई थीं।

आयतें 2, 3. यदि रपीदीम में वह नहीं पाया गया जो लगता था कि उसमें होना चाहिए था, तो इस्राएलियों की निराशा, क्रोध, और डर को अधिक समझा जा सकता है, यद्यपि अभी भी अनभिज्ञ है। उन्होंने इस संकट का सामना किया जैसा कि उन्होंने अन्य समस्याओं का किया था। मिस्र में अपने घरों को छोड़ने के बाद से चौथी बार वे **मूसा पर बुड़बुड़ाने लगे**।[2]

मूसा ने पहले लोगों को तर्क देने का प्रयास किया, अपने व्यवहार को बदलने के लिये उनसे आग्रह कर रहा था। वे न केवल मूसा के विरोध बोल रहे थे, परन्तु वे **यहोवा की परीक्षा कर** रहे थे - एक खतरनाक काम करना।

लोगों को रोका नहीं जा सकता था। **वे मूसा पर बुड़बुड़ाने लगे**, और उसपर फिर से आरोप लगाया - जैसा कि पहले किया था (16:3) - उन्हें **मिस्र से** निकालकर **मार डालने** के लिये जंगल में ले आया है।

आयत 4. मूसा, जो विशेषकर पहले की शिकायतों से अधिक वर्तमान विरोध के बारे में चिन्तित था, ने इस मामले को परमेश्वर के पास लेकर आया। उसने

यहोवा की दोहाई दी, और कहा, कि उसे **क्या** करना चाहिए। मूसा ने सोचा कि **लोग** इतने निराश थे कि वे उस पर **पथराव करने** को तैयार थे।

आयत 5. यहोवा ने यह दिखाने के लिये कि वह वही था जिसने लोगों को पीने का पानी दिया था एक योजना के साथ उत्तर दिया। इस अवसर के बारे में सब कुछ उस संदेश को स्पष्ट करने के लिये बनाया गया था। **मूसा** को **इस्राएल के वृद्ध लोगों में से कुछ को अपने साथ ले आगे बढ़ना** था। दूसरे शब्दों में, पानी को निकलना एक गंभीर सार्वजनिक अवसर होना था; कोई भी इस महत्वपूर्ण अवसर को खोना नहीं चाहेगा। चमत्कार गुप्त में नहीं किया गया था; वहाँ क्या हुआ था का विवरण देने के लिये विश्वसनीय प्रत्यक्षदर्शी (वृद्ध लोग) होने चाहिए।

इस समारोह के लिये, मूसा को **लाठी** को (अपने) **हाथ में लेना** था जिसे उसने मिस्र में अद्भुत काम करने के लिये प्रयोग किया था। इस लाठी के साथ **नील नदी** को छूते हुए, उसने पहली विपत्ति की शुरुवात की थी, जिससे पानी लहू में बदल गया (7:17, 20)। लाठी का अर्थ था कि यहोवा ने अद्भुत काम किया था, और जिन लोगों ने मूसा को ऐसे करते देखा था, वे अपेक्षा कर सकते थे कि यहोवा आगे भी अद्भुत काम करने जा रहा था।

आयत 6. यहोवा ने मूसा से कहा कि वह **आगे चलकर होरेब पहाड़ की एक चट्टान पर खड़ा** रहेगा। कुछ अर्थ में, परमेश्वर स्वयं वहाँ था जब चट्टान पर मारा गया था। ऐसा हो सकता है कि दिन में उसकी उपस्थिति का बादल डेरे पर छा जाता था वह इस अवसर पर चट्टान की ओर हो।[3] परन्तु परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति का ज्ञात करवाया, लोगों को पता था कि यहोवा वहाँ था; मूसा अपने आप पानी नहीं निकाल रहा था।

इस बिंदु पर "होरेब" का उल्लेख समस्याजनक है क्योंकि 19:2 से पता चलता है कि सीनै पर्वत की यात्रा करने के लिये इस्राएलियों को रपीदीम छोड़ना पड़ा था। सम्भवतया, दो बातों को सुलझाने का सबसे अच्छा तरीका यह मानना है कि होरेब विभिन्न प्रकार के पहाड़ों की एक श्रृंखला को संदर्भित करता है। इस्राएली लोग वहाँ पहुँच सकते थे, परन्तु फिर भी विशिष्ट स्थान पर पहुँचने के लिये यात्रा कुछ दूरी की थी जहाँ उन्हें व्यवस्था प्राप्त करना होगा।

यहोवा ने मूसा को **चट्टान पर मारने** का निर्देश दिया, और यह वायदा किया कि **लोगों** के लिये **पीने** का **पानी** निकल जाएगा। पाठ में पानी के लिये खोदने या छिपे हुए जल के सोते को खोजने के बारे में कुछ नहीं कहा गया है। जिस तरह से पानी का निकलना शुरू हुआ था, उसने इस्राएल को यह स्पष्ट किया कि उनकी प्यास स्वयं यहोवा के द्वारा बुझाई जा रही थी। बाद में, उन्हें मालूम हो जाएगा कि उन्हें जादू की छड़ी घुमाकर मूर्ख नहीं बनाया गया था; परन्तु उन्होंने परमेश्वर के एक और प्रताप के काम को देखा था। विल्बर फील्ड्स ने सुझाव दिया कि यह चट्टान कुछ दूरी पर हो सकता है, शायद डेरे से कुछ मील की दूरी पर हो। उसने भजन संहिता 78:15, 16 का हवाला दिया: "... उसने चट्टान से भी धाराएँ निकालीं और नदियों का सा जल बहाया।"[4] पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 10:4 में इस घटना को संदर्भित किया, जहाँ उसने कहा कि मसीह वह चट्टान है जिससे पानी

का सोता बह निकला।

कहानी इन उत्साहजनक शब्दों के साथ समाप्त होती है: **और मूसा ने वैसा ही किया।** कम से कम एक इस्राएली तो यहोवा के लिये आज्ञाकारी थे। मूसा ने चट्टान पर मारा, पानी निकला, लोगों ने पिया, और **वृद्ध लोगों** ने जो कुछ हुआ था, वह सब कुछ प्रत्यक्ष रूप से देखा।

आयत 7. इस अध्याय में एक अग्रलेख शामिल है: मूसा ने उस जगह का नाम **मस्सा** (जिसका अर्थ "परीक्षा") और **मरीबा** (जिसका अर्थ "झगड़ा") था, जो वहाँ पर इस्राएल के अनुभव के कारण था। **इस्राएलियों** में **झगड़ा**[हुआ] था और इस स्थान पर **यहोवा की परीक्षा** की गई थी। लोगों ने अपने बीच परमेश्वर की उपस्थिति और शक्ति पर संदेह किया था। चाहे या नहीं, किसी ने मौखिक रूप से कहा, **"क्या यहोवा हमारे बीच है?"** पानी की कमी की उनकी शिकायत उनके संदेह को दर्शाता था। यदि वे परमेश्वर पर भरोसा करते थे, तो उन्हें प्रश्न नहीं करना था कि वह उनकी आवश्यकताओं के लिये प्रदान करेगा। परमेश्वर पर संदेह करना और प्रश्न उठाना उसकी "परीक्षा" करना है।

तथ्य यह है कि उस स्थान का नाम "मस्सा और मरीबा" था, जो चर्चा का विषय बन गया है।[5] इसी तरह की घटना के बाद कादेश के जंगल में भटकने के समाप्ति पर, लेख में "मरीबा का जल" (गिनती 20:13) है। अधिकांश उदार टिप्पणीकारों का कहना है कि निर्गमन 17 और गिनती 20 एक ही घटना के दो अलग-अलग लेख हैं।[6] यदि नहीं, तो स्थानों को समान नाम क्यों दिया गया है? तर्क के इस तरीके के उत्तर में, आर. एलन कोल ने लिखा, "निःसंदेह, अगर एक ही घटना दो बार हुई, तो ऐसा कोई कारण नहीं है कि एक ही नाम का प्रयोग दो बार नहीं किया जाना चाहिए।"[7]

यदि बाइबल के लेखों को स्वीकार किया जाता है जैसे कि वे लिखे गए हैं, तो कोई भी यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि दो कहानियाँ अलग-अलग घटनाओं से जुड़ी हुई हैं। विवरण बहुत अलग अलग हैं, यह सम्भावना हो सकता है कि वे समान घटना के दो असम्भव लेख हैं। वे अलग-अलग स्थानों पर और समय पर हुआ। इसके अलावा, परिणाम अलग अलग थे, क्योंकि दूसरी घटना के बाद यहोवा मूसा से अप्रसन्न था। कहानियों को पुस्तक के बाकी हिस्सों में अलग लेखों के रूप में स्मरण किया जाता है।[8]

रपीदीम में अमालेकियों पर विजय (17:8-16)

विजय प्राप्त हुआ (17:8-13)

8तब अमालेकी आकर रपीदीम में इस्राएलियों से लड़ने लगे। 9तब मूसा ने यहोशू से कहा, "हमारे लिये कई पुरुषों को चुनकर छाँट ले, और बाहर जाकर अमालेकियों से लड़; और मैं कल परमेश्वर की लाठी हाथ में लिये हुए पहाड़ी की चोटी पर खड़ा रहूँगा।" 10मूसा की इस आज्ञा के अनुसार यहोशू अमालेकियों से

लड़ने लगा; और मूसा, हारून, और हूर पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गए। [11]जब तक मूसा अपना हाथ उठाए रहता था तब तक तो इस्राएल प्रबल होता था; परन्तु जब जब वह उसे नीचे करता तब तब अमालेक प्रबल होता था। [12]पर जब मूसा के हाथ भर गए, तब उन्होंने एक पत्थर लेकर मूसा के नीचे रख दिया, और वह उस पर बैठ गया, और हारून और हूर एक एक अलंग में उसके हाथों को सम्भाले रहे; और उसके हाथ सूर्यास्त तक स्थिर रहे। [13]और यहोशू ने अनुचरों समेत अमालेकियों को तलवार के बल से हरा दिया।

आयत 8. इस बार, इस्राएलियों ने मानव जाति द्वारा उत्पन्न किया गया समस्या का सामना किया। **अमालेकी,** जो लोग सीनै के जंगल में और कनान के दक्षिणी भाग में रहते थे, **आकर रपीदीम में इस्राएलियों से लड़ने लगे।** शायद वे इस्राएल को अपनी पहाड़ी और आजीविका के लिये खतरे के रूप में देख रहे थे, जैसा कि बाद के समय में एदोमी लोगों ने भी किया था (देखें गिनती 20:14-21)।[9] परन्तु, अमालेक के हमले को अपने क्षेत्र की रक्षा करने के प्रयास के रूप में नहीं, परन्तु इस्राएल को लूटने के प्रयास के रूप में वर्णित किया गया है। इसलिये, परमेश्वर ने घोषणा की कि इस्राएल को "अमालेक का नाम धरती पर से मिटा डालना" था। व्यवस्थाविवरण 25:17-19 कहता है,

> स्मरण रख कि जब तू मिस्र से निकलकर आ रहा था तब अमालेक ने तुझ से मार्ग में क्या किया, अर्थात् उनको परमेश्वर का भय न था; इस कारण उसने जब तू मार्ग में थका माँदा था, तब तुझ पर चढ़ाई करके जितने निर्बल होने के कारण सबसे पीछे थे उन सभों को मारा। इसलिये जब तेरा परमेश्वर यहोवा उस देश में, जो वह तेरा भाग करके तेरे अधिकार में कर देता है, तुझे चारों ओर के सब शत्रुओं से विश्राम दे, तब अमालेक का नाम धरती पर से मिटा डालना; और तुम इस बात को न भूलना।

आयत 9. मूसा ने **यहोशू** को अमालेकियों के विरुद्ध लड़ने के लिये एक सैन्य बल की अगुवाई करने को इस्राएलियों के बीच से नियुक्त किया। लेख में पहली बार बिना स्पष्टीकरण या आगे की पहचान के यहोशू का वर्णन किया गया है। स्पष्ट है, मूसा का मानना था कि उसके पाठकों को पहले से ही उसके साथ परिचित होना होगा। यहोशू मूसा का युवा सहायक था (24:13; 33:11; गिनती 11:2-8), जिन्हें बाद में मूसा का स्थान इस्राएल के अगुवा के रूप में ले लिया (व्यव. 31:3, 7, 23; 34:9)। जंगल में युद्ध में उसके शुरुवाती अनुभवों ने उसे चालीस वर्ष बाद कनान की विजय का नेतृत्व करने के लिये प्रेरित किया।

जैसा कि यहोशू अमालेकियों के विरुद्ध लड़ा, मूसा स्वयं युद्ध की ओर देखते हुए **परमेश्वर की लाठी** अपने **हाथ में** लिए एक **पहाड़ी की चोटी** पर खड़ा होगा। मूसा के हाथों में "परमेश्वर की लाठी" एक अस्त्र था जिसे परमेश्वर अक्सर महान कामों को पूरा करने के लिये उपयोग करता था। मूसा ने न केवल युद्ध देखना, बल्कि इस्राएली सैनिकों को प्रोत्साहित करने और इस लाठी का उपयोग करके

परमेश्वर की सहायता को सुरक्षित करने का इरादा भी किया था।

आयत 10. यहोशू अगले दिन अपने सैनिकों के साथ अमालेकियों से लड़ने के लिये निकला। **मूसा, हारून** और **हूर** के साथ, **पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गया।** हूर मूसा के सहयोगियों में से एक थे, जो हारून के साथ प्रभारी था, जब मूसा दूर हुआ करता था (24:14)। जोफसेस द्वारा दर्ज एक परम्परा के अनुसार, हूर मरियम का पति था - और इसलिये मूसा का जीजाजी था।[10]

आयतें 11-13. पहाड़ी पर अपने स्थान पर, **मूसा अपना हाथ उठाए रहता था,** और अपनी लाठी को पकड़े हुए रहता था। जब वह ऐसा करता था, **इस्राएल** युद्ध में प्रबल होता था। अन्ततः, **मूसा** थक गया और उसके **हाथों** को नीचे करना पड़ा। जब वह ऐसा करता था, तब अमालेक प्रबल होता था। इसके बाद, इस्राएल की जीत सुनिश्चित करने के लिये, **हारून और हूर** ने मूसा के बैठने के लिये **एक पत्थर** रख दिया और पूरे दिन **उसके हाथ सूर्यास्त तक स्थिर रहे।** लड़ाई अमालेकियों के ऊपर **यहोशू** और इस्राएल की भारी जीत के साथ समाप्त हुई।

मूसा ने अपने हाथों को ऊपर उठाते हुए जीत में किस प्रकार की भूमिका निभाई? नहूम एम. सरना ने तीन सम्भावनाओं का सुझाव दिया: (1) मूसा के फैलाए हुए हाथों ने प्रार्थना या याचना का प्रतिनिधित्व किया। परन्तु, जैसा कि सरना ने कहा, “हम शायद ही यह मान सकते हैं कि जब मूसा हाथों को नीचे करता था तो वह प्रार्थना करना बन्द कर देता था।” (2) क्योंकि, प्राचीन निकट पूर्व में, हाथ शक्ति या सामर्थ्य को दर्शाता था, मूसा का ऊपर उठा हुआ हाथ “इस्राएली योद्धाओं के लिये ईश्वरीय शक्ति की मध्यस्थता करता था।” यदि यह स्पष्टीकरण सही है, तो सरना ने कहा, इसमें “न तो जादुई रीति और न ही जादुई मन्त्र शामिल है।” (3) तीसरी सम्भावना है, जो सरना को प्रेरक लगा, यह सुझाव है “कि मूसा ने एक चिह्न दिया जो इस्राएली ताकतों को शक्ति जुटाने और मनोबल बढ़ाने के लिये काम करता था।” इस सम्भावना का साक्ष्य इस तथ्य पर निर्भर हो सकता है कि इस घटना को स्मरणोत्सव मनाने के लिये जो मूसा ने वेदी बनाया था, उसका नाम “यहोवा मेरी जीत का झंडा [या प्रतीक] है”[11] दिया गया।

मूसा का हाथों को ऊपर उठाने का प्राथमिक उद्देश्य यह दिखाना था कि इस्राएल की जीत सेना की शक्ति से नहीं, बल्कि यहोवा की शक्ति से प्राप्त की गई थी। सच तो यह था कि युद्ध में वास्तविक विजेता परमेश्वर था, जो और अधिक स्पष्ट हो गया होता यदि मूसा अपने हाथ में “परमेश्वर की लाठी” को ऊपर पकड़ कर रखता। वह लाठी तब “प्रतीक चिह्न” या “झंडा” बन चुकी होती, जो जब सैनिकों द्वारा देखा जाता था, तो उन्हें शक्ति जुटाने और अधिक दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास के साथ लड़ने का साहस मिलता।

जीत पुस्तक में लिखी गई (17:14-16)

14तब यहोवा ने मूसा से कहा, “स्मरणार्थ इस बात को पुस्तक में लिख ले और यहोशू को सुना दे कि मैं आकाश के नीचे से अमालेक का स्मरण भी पूरी रीति से

मिटा डालूँगा।" [15]तब मूसा ने एक वेदी बनाकर उसका नाम 'यहोवा निस्सी' रखा; [16]और कहा, "यहोवा ने शपथ खाई है, कि यहोवा अमालेकियों से पीढ़ियों तक लड़ाई करता रहेगा।"

आयत 14. बाइबल में लिखने पर पहले उल्लेख में,[12] **यहोवा** ने **मूसा** को पुस्तक में लिखने के लिये कहा था कि वह **अमालेक** को नाश करेगा। मूसा के लिये परमेश्वर के निर्देश **सुनाने** के लिये जो उसने **यहोशू** को लिखे थे इंगित करता है कि उसे उसका उत्तराधिकारी बनना था।

इस घटना के बाद, अमालेक के लोगों का संदर्भ केवल इस्राएल के शत्रु होने के संदर्भ में पाए जाते हैं। दो मामलों में विशेष रूप से प्रमुख हैं (1) गिनती 14:39-45 में, बारह भेदियों के विवरण के सम्बन्ध में इस्राएलियों ने पाप किया था और उन्हें जंगल में एक पीढ़ी बिताए जाने की उनकी निन्दा की गई थी। परन्तु, लोगों ने वैसे भी भूमि में प्रवेश करने का दृढ़ संकल्प लिया था। जब उन्होंने परमेश्वर की स्वीकृति या सहायता के बिना ऐसा करने की माँग की तो वे "अमालेकियों और कनानियों" से पराजित हो गए। (2) 1 शमूएल 15:2 में यहोवा ने शमूएल के द्वारा शाऊल से कहा, "मुझे स्मरण है कि अमालेकियों ने इस्राएलियों के साथ क्या किया; जब इस्राएली मिस्र से आ रहे थे, तब उन्होंने मार्ग में उनका सामना किया।" तब शाऊल को अमालेकियों को पूरी तरह से नष्ट करने का निर्देश दिया गया था, परन्तु वह ऐसा करने में विफल रहा (1 शमूएल 15:3-9)।

आयतें 15, 16. अमालेक को जीतने के लिये, **तब मूसा ने एक वेदी बनाकर उसका नाम 'यहोवा निस्सी'** अर्थात्, यहोवा मेरा झंडा है **रखा।** इस्राएल ने अक्सर परमेश्वर के लोगों के जीवन में महान घटनाओं को मनाने के लिये एक स्मारक या एक वेदी बनाई या पत्थरों का ढेर खड़ा किया (देखें यहोशू 4:1-7)। स्पष्ट रूप से वेदी के समर्पण के अवसर पर, मूसा ने जो शपथ ग्रहण किया वह यहोवा ने दोहराया **यहोवा ने शपथ खाई** [थी]**, "कि वह अमालेकियों से पीढ़ियों तक लड़ाई करता रहेगा।"**

अनुप्रयोग

यहोवा की परीक्षा करना (17:2, 7)

जब इस्राएलियों ने "मूसा से वाद-विवाद किया" और "मूसा के विरुद्ध बड़बड़ाए" (17:2, 3), तो वे वास्तव में यहोवा की परीक्षा कर रहे थे (17:2, 7)। उन्होंने यहोवा की परीक्षा यह संदेह दिखाकर की थी कि वह हमारे बीच में है कि नहीं। जब हम अपनी परिस्थितियों के बारे में शिकायत करते और बड़बड़ाते हैं, क्या हम यहोवा की परीक्षा नहीं करते? क्या हम यह संदेह नहीं करते कि "वह हमारे बीच है?" क्या हम ऐसा व्यवहार नहीं करते कि मानो वह हमसे बहुत दूर है और उसे हमारी समस्याओं के विषय में कोई चिंता नहीं है? हमें इस्राएलियों के समान यहोवा की "परीक्षा" नहीं करनी चाहिए।

एक दूसरे के हाथ पकड़े रहना (17:8-16)

हारून और हूर मूसा के हाथों को ऊपर उठाए रहे और इस्राएली युद्ध में अमालेक के ऊपर विजयी हो गए। हमारे लिए यह एक अच्छा उदाहरण है। हारून और हूर ने प्रोत्साहन देने वाले को प्रोत्साहन दिया! मसीहियों के रूप में हमारे जीवनों में भी यह परिस्थिति घटित हो सकती है। हम एक आत्मिक युद्ध में हैं (इफि. 6:10-13)। इस युद्ध को जीतने के लिए हमें ईश्वरीय सहायता और दूसरों के प्रोत्साहन की आवश्यकता पड़ती है। इसी कारण, हमें प्रोत्साहित भी करना चाहिए और प्रोत्साहन भी ग्रहण करना चाहिए (इब्रा. 3:12, 13; 10:19-25)।

हमें आराधना करने के लिए एकत्र होने को उच्च प्राथमिकता पर रखना चाहिए क्योंकि मण्डली वह स्थान है जहाँ हमें प्रोत्साहन प्राप्त होता है। हमारे चारों ओर आत्मिक खतरा है। क्योंकि निराशा हमारी अनंत नियतियों को प्रभावित करती है, हमारे संगी मसीहियों के साथ सहभागिता में समय बिताना अति महत्वपूर्ण है। मसीह में कलीसियाई जीवन के बिना कोई जीवन नहीं है।

परमेश्वर एक सहायक के माध्यम से हमारी सहायता करता है (यूहन्ना 14:1-9, 16), जो है पवित्रात्मा। "सहायक" शब्द यूनानी παράκλητος *(पैराक्लितोस)* शब्द से आया है, जिसका अर्थ "अभिवक्ता, सहायक, प्रोत्साहित करने वाला है।" आओ हम एक दूसरे को प्रोत्साहित करें। हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन में हम एक दूसरे के हाथों को थाम सकते हैं।

मूसा के हाथों को ऊपर की ओर थामे रखना (17:12)

हारून और हूर के द्वारा मूसा के हाथों को ऊपर की ओर थामे रखना उन सहायकों की उस सहायता के लिए एक कहावत बन गया है जो एक महान व्यक्ति को दी जाती है। एक महान सुसमाचार प्रचारक समस्त भाइयों के समाज में मण्डलियों में वाक्पटुता से बोलता है, परन्तु कोई और उसकी नियोजित भेटों की समय सारणी बनाने या उसके लिए यातायात का प्रबंध करने के द्वारा ऐसा संभव बना देता है। एक प्रचारक एक मण्डली में अच्छा कार्य करता है, परन्तु अन्य लोग, उदाहरण के लिए, सचिव का कार्य करने के द्वारा उसकी सहायता करना। एक लेखक अपनी लोकप्रियता प्राप्त करता है, परन्तु अन्य लोग उसकी व्याकरण और वर्तनी में सहायता करते हैं। वक्ता, प्रचारक, या लेखक प्रशंसा प्राप्त करता है, परन्तु उसके सहायक उसका कार्य करना संभव बनाते हैं। यदि हम महान अगुवे नहीं बन सकते, तो आओ हम सभी मिलकर उन लोगों का हाथ थामने में महान बने जो महान हैं। यदि हम ऐसा करें, तो हम स्वयं भी परमेश्वर के द्वारा आशीष पाएंगे, चाहे हमारे कार्यों पर दूसरों के द्वारा ध्यान दिया जाए या नहीं।

जब परमेश्वर "बैर रखता है" (17:14-16)

निर्गमन 17:14-16 के शब्द संकेत करते हैं कि यहोवा के मन में अमालेक के विरुद्ध बैर था। उस देश के प्रति उसकी शत्रुता तब तक बनी रही जब तक वे एक

साथ नष्ट नहीं हो गए। यह विचित्र लगता है, विशेषतः तब जब वह हमें बैर रखने से मना करता है (लैव्य. 19:18; कुलु. 3:13)। आइए हम विचार करें कि उसने मूसा के दिनों में जिस प्रकार अमालेक के साथ व्यवहार किया और उसका व्यवहार अमालेकियों के प्रति जैसा था उसका तात्पर्य उन लोगों से हैं जो आज के समय में उनके समान हैं।

परमेश्वर ने अमालेक के साथ कैसा व्यवहार किया? निर्गमन 17 में इस्राएल को मिस्र से छुड़ाया जा चुका था। वे जंगल से होकर सीनै पर्वत की ओर यात्रा कर रह थे, जहाँ पर उन्हें परमेश्वर की व्यवस्था प्राप्त होगी। मार्ग में उन्होंने कठिनाइयों का सामना किया जिसने उनका नेतृत्व शिकायत करने की ओर किया, परन्तु परमेश्वर ने उनकी जल (अध्याय 15) और भोजन (अध्याय 16) की आवश्यकताएँ पूरी की। इसके बाद वे रपीदीम में आए, एक ऐसा स्थान जहाँ "लोगों के पीने के लिए पानी नहीं था" (17:1)। एक बार फिर, उन्होंने शिकायत की और परमेश्वर ने इस बार उन्हें चट्टान से पानी देने के द्वारा अनुग्रहपूर्ण उत्तर दिया।

आगे हमारे शब्द के लिए स्थिति आती है। अमालेक ने इस्राएल पर आक्रमण कर दिया। मूसा ने यहोशू को अमालेकियों के विरुद्ध लड़ने के लिए एक सेना को एकत्र करने की आज्ञा देने के द्वारा प्रतिक्रिया दी। अगले दिन, यहोशू ने युद्धक्षेत्र में अपने लोगों का नेतृत्व किया जबकि मूसा ने, हारून और हूर को साथ लेकर, पास की ही एक पहाड़ी पर अपना स्थान लिया। जैसे ही दोनों सेनाएं युद्ध करने लगी, मूसा ने अपने हाथ ऊपर उठा लिए। जितनी देर वह अपने हाथ को ऊपर किए रहा, इस्राएल अपने शत्रु के ऊपर प्रबल होता रहा। हालाँकि, अंत में, वह थक गया और उसे अपने हाथ को विश्राम देना पड़ा। "जब उसने अपने हाथ को नीचे किया, तो अमालेक प्रबल होने लगा" (17:11)। हारून और हूर उसके बैठने के लिए एक पत्थर ले आए, और उन्होंने "उसके हाथों को सहारा दिया," और वे सूर्य के अस्त होने तक उन्हें ऊपर की ओर पकड़े रहे। हम पढ़ते हैं कि "यहोशू ने तलवार के बल से अमालेक और उसके लोगों को हरा दिया" (17:12, 13)। इसके बाद, परमेश्वर ने घोषणा की और कहा कि वह "आकाश के नीचे से अमालेक का स्मरण पूरी रीति से मिटा डालेगा" और यह भी कि वह "अमालेक से पीढ़ियों तक लड़ाई करता रहेगा" (17:14-16)।

यदि हम इस बात को सोचें कि परमेश्वर अमालेक को निरंतर दंड और सर्वनाश की चेतावनी क्यों देगा, तो इस प्रश्न का उत्तर व्यवस्थाविवरण 25:17-19 में दिया गया है, जहाँ मूसा ने लिखा कि तब अमालेक ने "तुझ से मार्ग में क्या किया अर्थात् उनको परमेश्वर का भय न था; इस कारण उसने जब तू मार्ग में थका-माँदा था, तब तुझ पर चढ़ाई करके जितने निर्बल होने के कारण सबसे पीछे थे उन सभों को मारा" (व्यव. 25:18)। अमालेकी अपनी मातृभूमि की रक्षा नहीं कर रहे थे। वे शिकारियों की तरह, परमेश्वर के चुने हुए लोगों में से सबसे निर्बल लोगों पर घात लगाए बैठे थे, जो सम्पूर्ण रीति से "थके-माँदे" थे। वे परमेश्वर के क्रोध के लायक थे।

परमेश्वर अमालेक के साथ युद्ध करता रहा। बाद में, बारह जासूसों की बुरी

सूचना से सम्बन्धित अमालेकियों के पाप के बाद, इस्राएल ने परमेश्वर की आदेशों के विरुद्ध अपने बल पर प्रतिज्ञा के देश में जाने का प्रयास किया। इस अवसर पर वे "अमालेकियों और कनानियों" के द्वारा पराजित हो गये (गिनती 14:45)। हालाँकि, पेंटाटुक (मूसा की पाँच पुस्तकें) के अन्य अंशों में अमालेक के सर्वनाश की भविष्यवाणी की गई है (गिनती 24:20) और इस्राएल के लिए "अमालेक का स्मरण आकाश के नीचे से मिटा देना" आवश्यक बताया गया है (व्यव. 25:17-19)। पहला शमूएल 15 अध्याय वर्णन करता है कि शाऊल को अमालेकियों को पूरी तरह से नाश करने का कार्य दिया गया था। शाऊल ने पूरी तरह से परमेश्वर के आदेशों का पालन नहीं किया, इसी कारण दाऊद को फिर से अमालेकियों से लड़ना पड़ा था (1 शमूएल 27:8; 30)। आखिरकार हिजकिय्याह के राज्य के दौरान वे पूरी तरह से नाश कर दिए गए (1 इतिहास 4:41-43)।

परमेश्वर ने अमालेकियों से जिस प्रकार का व्यवहार किया था उसने ऐसा क्यों किया? अमालेक के प्रति परमेश्वर की शत्रुता का इतिहास इस प्रश्न का उत्तर नहीं देता "क्यों" परमेश्वर, सैकड़ों वर्षों तक अमालेकियों के विरुद्ध उस पाप को थामे रहा जो उनके पूर्वजों ने किया था?

हम इसे निश्चित तौर पर नहीं जान सकते कि परमेश्वर जो करता है वह क्यों करता है। परमेश्वर जो करता है वह सही है क्योंकि वह परमेश्वर है, परन्तु हम उसके कारणों के प्रति तब तक आश्वस्त नहीं हो जब तक कि वह उन कारणों को प्रकट न करे। फिर भी, हम यह अवलोकन कर सकते हैं: (1) परमेश्वर का अमालेकियों को निरंतर दंड देना यह चित्रण कर सकता है कि जब उसने कहा था कि "वह पितरों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों वरन् पोतों और परपोतों को भी देनेवाला है" (34:7) तो उसका अर्थ क्या था। (2) निर्गमन 17 में अमालेकियों का इस्राएल पर आक्रमण संभवतः उनका एकमात्र पाप नहीं था। एक युद्ध करने वाली जाति के समान जो उनके पड़ोसियों पर घात लगाए रहते थे, वे सर्वनाश के योग्य थे। (3) यदि कम से कम कहा जाए, तो भी अमालेक के विरुद्ध परमेश्वर की शत्रुता दर्शाती है कि परमेश्वर अपने लोगों के अनादर को हल्के में नहीं लेता (जैसा कि पुराने नियम का पवित्रशास्त्र प्रस्तुत करता है)। इस्राएल पर आक्रमण करना परमेश्वर पर आक्रमण करना था। इसी कारण जिन्होंने इस्राएल पर आक्रमण किया वे शीघ्र ही या बाद में अपने विनाश की आशा रख सकते थे।

क्या परमेश्वर आज भी बैर रखता है? क्या उसने कुछ राष्ट्रों को सर्वनाश का श्राप दिया है? परमेश्वर का अब कोई भौतिक देश नहीं है जिसके अपने होने का वह दावा करता है। वह राष्ट्रों की नियति का निर्णय लेता है और एक देश की क्रूरता के कारण उसे ढा देने का निर्णय ले सकता है। हालाँकि, यदि वह ऐसा करता है, तो वह इस निर्णय को मनुष्यों को नहीं बताता। हम इस बात से निश्चित नहीं हो सकते कि वह वास्तव में क्या कर रहा है और क्यों कर रहा है? क्योंकि उसने हमें जो भी अपने वचन में बताया है, तो हम परमेश्वर के द्वारा नाश के विषय में दो सत्यों पर भरोसा कर सकते हैं।

परमेश्वर उन लोगों को नाश करेगा जो उसके लोगों को सताते हैं।

प्रकाशितवाक्य स्पष्ट तौर पर उस सत्य के विषय में सिखाता है, इसी के समान 2 थिस्सलुनीकियों 1:6-9 भी सिखाता है। परमेश्वर उन लोगों के विरुद्ध "बैर रखता है" जो उसके लोगों का विरोध करते हैं। वह हमारी सहायता के बिना ही उसके लोगों के शत्रुओं का नाश करेगा। हमें, परमेश्वर के लोग, और कलीसिया होने नाते, हथियार उठाकर मसीह के शत्रुओं को नाश करने की आवश्यकता नहीं है।

परमेश्वर पश्चाताप न करने वाले पापियों का सर्वनाश करेगा। परमेश्वर हमारे पापों को स्मरण रखता है और उनके कारण हमें निकम्मा ठहराता है। हम जब तक पापमय स्थिति में बने रहते हैं, परमेश्वर हमारे विरोध "बैर की भावना" थामे रहता है। यदि वह ऐसा करना जारी रखे, तो अंत में हम अनंत आग में नाश हो जाएंगे।

ठहरें! एक शुभ समाचार है! मसीह के लहू के द्वारा, हम क्षमा किए जा सकते हैं। जब मसीह की ओर मुड़ते हैं - उसमें विश्वास करने के द्वारा, और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने के द्वारा - परमेश्वर हमें क्षमा करेगा। इसके बाद हम इब्रानियों 8:12 के सुख का अनुभव कर सकते है: "क्योंकि मैं उनके अधर्म के विषय में दयावन्त हूँगा, और उनके पापों को फिर स्मरण न करूँगा।"

एक स्मारक का मूल्य (17:15, 16)

बड़े अवसरों के बाद, परमेश्वर के लोगों ने प्रायः यह स्मरण रखने के लिए कि क्या हुआ था स्मारकों का निर्माण करवाया। परमेश्वर ने स्वयं भी स्मारक (फसह और प्रभु भोज) स्थापित किए ताकि उसके लोग उनके छुटकारे को स्मरण रख सकें। संभवतः व्यक्तिगत, पारिवारिक, और मण्डली के रूप में हमें हमारे जीवनों की बड़ी घटनाओं के लिए "स्मारकों" का निर्माण करना चाहिए। हमें भूतकाल में इतना नहीं बसना चाहिए कि हम आगे बढ़ने में असफल हो जाएं, परन्तु "स्मारक" जवान पीढ़ियों को वह सिखाने में हमारी सहायता कर सकते हैं जो परमेश्वर ने हमारे लिए किया है।

समाप्ति नोट्स

[1]एस. आर. ड्राइवर, *द बुक ऑफ एक्सोडस,* द कैम्ब्रिज बाइबल फॉर स्कूल्स एण्ड कॉलेजेस (कैम्ब्रिज: यूनिवरसिटी प्रेस, 1953), 155-56 में रेपीदीम के सम्भावित स्थानों पर चर्चा की गई है; आर. एलन कोल, *एक्सोडस: एन इंट्रोडक्शन एण्ड कमेन्ट्री,* टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेन्ट्री (डाउनर्स ग्रोव, इल्लिनोय: इंटर-वेरसिटी प्रेस, 1973), 133-34; एण्ड रोनाल्ड एफ. यंगब्लड, *एक्सोडस,* एवरीमैन बाइबल कमेन्ट्री (शिकागो: मूडी बाइबल इंस्टीट्यूट, 1983), 85. [2]जब मिस्र में तब भी, उन्होंने मूसा की शिकायत की थी, जब मिस्रियों ने उन्हें जाने की आज्ञा नहीं दी थी और बदले में उनके कार्य का बोझ बढ़ा दिए थे (5:21)। मिस्र छोड़ने के बाद, उन्होंने शिकायत की जब वे फ़िरौन की सेना और समुद्र (14:11, 12) के बीच फँस गए थे। उन्होंने मारा (15:23, 24) में कड़वा पानी के और सीन के जंगल में कोई भोजन नहीं होने के कारण शिकायत की (16:2, 3)। शिकायत करते हुए उन्होंने हर समय लगभग एक समान बात कही। [3]वाल्टर सी. कैसर, जूनियर, "एक्सोडस," इन *दि एक्सपोसिटर'स बाइबल कमेन्ट्री,* वॉल्यू. 2, *जेनेसिस-नम्बर्स* (ग्रैंड रेपिड्स, मिशिगन: जॉन्डरवन, 1990), 407. [4]विल्बर फील्ड्स, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडस,* बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज (जोप्लिन, मिसौरी: कॉलेज प्रेस, 1976), 365. [5]देखें कोल, 133-34. [6]उदाहरण के लिये, देखें

मार्टिन नॉथ, *एक्सोडस,* ट्रांस. जे. एस. बॉडेन, दि ओल्ड टेस्टामेंट लाइब्रेरी (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1962), 140. [7]कोल, 134. [8]चट्टान पर मारने और पानी निकालने के पहले चमत्कार को सामान्यतः अधिक सामान्य भाषा में उल्लिखित किया गया है (व्यव. 8:15; 33:8; भजन 78:15, 16, 20; 95.8; 105:41; 114:8; यशा. 48:21) गिनती में होने वाली घटना को आमतौर पर अधिक विस्तार से संदर्भित किया गया है (गिनती 20:24; 27:14; व्यव. 32:51; 33:8; भजन 106:32)। [9]ड्राइवर, 158. [10]जोसेफस *एन्टीक्यूटीस* 3.2.4.

[11]नहूम एम. सरना, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडसः दि ओरिजिन ऑफ बिब्लिकल इस्राएल* (न्यू यॉर्कः स्कोकेन बुक्स, 1996), 122-23. [12]उपरोक्त, 123.